अनुक्रमणिका

पृ. क्र. ४

अध्याय पहला

ज्ञानदेव अग्निहोत्री जी का साहित्यिक परिचय 11 - 22

१) नेफा की एक शाम
२) माटी जागी रे
३) वतन की आबरू
४) चिराग जल उठा
५) शुतरमुर्ग
६) अनुष्ठान
७) दंगा

अध्याय दूसरा

हिन्दी के प्रतीकात्मक नाटकों की समीक्षा 23 - 43

प्रतीक शब्द का अर्थ
प्रतीक की परिभाषा
प्रतीक स्वरूप एवं महत्व
प्रतीक नाटकों का विकासात्मक परिचय
भारतेन्दु कालीन प्रतीक नाटक
प्रसादयुगीन प्रतीक नाटक
प्रसादोत्तर प्रतीक नाटक
स्वातंत्र्योत्तर प्रतीक नाटक

अध्याय तीसरा

` शुतुरमुर्ग ` नाटक की शिल्प एवं मंचीयता 44 - 76

हिन्दी रंगमंच का प्रारंभिक रूप

हिन्दी रंगमंच का आरम्भ

१) लोक रंगमंच

२) पारसी रंगमंच

३) साहित्यिक रंगमंच

व्यावसायिक रंगमंच का पतन

आज का हिन्दी रंगमंच

अव्यावसायिक रंगमंच

अभिनेता

वेशभूषा-रंगभूषा

दृश्य सज्जा

प्रकाश व्यवस्था

संगीत योजना

` शुतुरमुर्ग ` की शिल्प एवं मंचीयता

- कथावस्तु
- संवाद योजना
- भाषा
- चरित्र-चित्रण
- अभिनेयता ।

अध्याय चौथा

`शुतुरमुर्ग` नाटक की प्रतीकात्मकता ---------- 77 - 92

`शुतुरमुर्ग` नाटक की प्रतीकात्मकता
पात्रोंका चरित्र-चित्रण -

१) राजा
२) रानी
३) रक्षामंत्री
४) माणिकमंत्री
५) महामंत्री
६) विरोधीलाल
७) मामूलीराम
८) दासी
९) मरता हुआ मनुष्य

अध्याय पाँचवा 93 - 97

उपसंहार

आधारभूत ग्रंथोंकी सूची 97 - 101